Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

उत्तराखंड (कुमाऊँ क्षेत्र) के "जागर गाथा गायन" का महत्व एवं उपयोगिता

JAGMOHAN PARGIEN

Assistant Professor (Music), Uttarakhand Open university, Haldwani, Nainital, Uttarakhand

सारांश

कुमाऊँ क्षेत्र पर्वतीय प्रदेश उत्तराखण्ड में स्थित है और यहाँ की सांस्कृतिक धरोहर में जागर गाथाएँ एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। जागर गायन विधा उत्तराखण्ड की स्थानीय सांस्कृतिक जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं और सांस्कृतिक अध्ययन में आदिकाल से ही एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आई हैं। कुमाऊँ की जागर गाथा गायन की एक विशिष्ट परम्परा और शैली होती है। धार्मिक गाथाएँ सामूहिक रूप से आयोजित होती है। प्रायः ग्राम अथवा अंचल में देव मंदिरों में इनका आयोजन होता है। सभी गांवों में लोक देवता की धूनी (आग का कुण्ड), मंदिर भी होता है जिनमें बैसी (बाईस दिनों की जागर), एक दिवसीय जागर लगती हैं। गांव के लोग गांव की सुख-समृद्धि तथा प्राकृतिक तथा भौतिक दुःखों के निवारण के लिए जागर लगाते हैं और देवता का पूजन करते हैं। यह परम्परानुसार पूरे विधि-विधान से आयोजित होती है। मंदिर में स्वच्छता और पवित्रता के साथ आयोजक (आयोजन करने वाला), डंगरिये और जगरिये के माध्यम से अपने ईष्ट विशेष की पूजा करते हैं, धूनी जलाते हैं, रात्रि में जागर लगती है। ऐसी जागर ईष्ट देवताओं जैसे ऐड़ी, भोलानाथ, गंगनाथ, गोलू, हरू, मशान, खबीस, क्षेत्रपात (भूमियां), कलविष्ट, बधान, चौमू, परियां (आंहरी), गोरिल, नरसिंह, भैरव आदि की होती है। इनका जगरिया, गांव का ढोली (ढोल बजाने वाला), जिसको जागर गाथ में भी दास कहते हैं, वादक अपने ढोल तथा साथ में दमाऊ बाजे के साथ जागर गाता है। मंदिर के अंदर एक कोने में दास का निश्चित स्थान होता है। सदियों से दास जागर लगाते आये हैं। लोक देवता का जागर लगाने वाला जगरिया अपने ढोल दमाऊ (हुड़का, थाली) की ताल के साथ उस देवता का आह्वान करते हुए इस तरह से गाता है कि जोश में आकर उस देवता का डंगरिया नाचने लगता है, उसके शरीर में कंपन उत्पन्न हो जाती है। और वह बाजे की ताल और लय पर उस देवता की नृत्य शैली में नाचता है। प्रत्येक देवता के डंगरिये की नाचने की पृथक विधि होती है।

मुख्य शब्द- जागर , डंगरिये, जगरिये, धूनी (आग का कुण्ड), "नज़र उतारना", ढोली

भूमिका-

उत्तराखण्ड के क्षेत्रीय देवता अत्यन्त महत्वपूर्ण है। सम्पूर्ण जागर गाथा गायन इन्ही देवी-देवताओं के ईर्द्र -गिर्द घूमता है। सत्यनाथ, ऐड़ी, भोलानाथ, गंगनाथ, गोलू, हरू, मशान, खबीस, क्षेत्रपात (भूमियां), कलविष्ट, बधान, चौमू, परियां (आंहरी), गोरिल, नरसिंह, भैरव, बालचन आदि स्थानीय देवता हैं। ये सभी देवताओं की शक्तियां है, जो जंगलों में विराजमान है जो वनों और अपने भक्तों के रक्षक है।

जगरिया अपने सहयोगियों के साथ जागर लगाते हुए

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

जागर गाथा गायन की उपयोगिता एवं महत्व

उत्तराखण्ड राज्य में जागर गायन पद्धति का महत्वपूर्ण स्थान है। जागर गायन शैली कुमांऊँ एव गढ़वाल दोनों ही स्थान पर देखने को मिलती है। जिस प्रकार कोस-कोस या घाट बदलने पर पानी बदलता है उसी प्रकार क्षेत्र, मण्डल, स्थान विशेष परिवर्तित होने पर जागर गायन शैली के प्रकार, स्वरूप आदि में परिवर्तन होना उचित ही प्रतीत होता है।

लोकगीत या लोक से सम्बन्धित किसी भी गीत प्रकार या नृत्य आदि की यह विशेषता होती है कि वह अपने आस-पास के वातावरण से सर्वाधिक प्रभावित होता है। सीमित संसाधनों के द्वारा अपने खान-पान, वेशभूषा, लोकगीतों या अन्य आवश्यकताओं की पूर्ति करना इनकी विशेषता मानी गई है। यही कारण है कि पुराने समय में चिकित्सीय सुविधाओं के अभाव तथा उचित संसाधन न होने के कारण मनुष्य ने प्रकृति का सहारा लिया। आस-पास की जड़ी-बूटी, फूल-पत्तियों आदि के द्वारा ही प्रारंभिक चिकित्सा प्रारम्भ की।

जब गांवों या ग्रामीण क्षेत्रों में किसी व्यक्ति विशेष की तबीयत खराब होने, डर जाने या किसी अनिष्ट की आशंका होती, तो घरेलू पूजा या नज़र उतारने जैसी क्रियाओं के माध्यम से ही हालत में सुधार होने लगता था। घरों में आज भी "नज़र उतारना" एक आम बात है जो असरदायक भी प्रतीत होती है।

धीरे-धीरे इन धार्मिक विश्वासों की मान्यता इतनी प्रबल होती चली गई कि कोई भी अनिष्ट, घरेलू क्लेश, दुःख बीमारी, कार्य न होने आदि की अवस्था में इन धार्मिक गीत विशेष के माध्यम से ही देवी देवताओं को पूजा जाने लगा। इसे देवी-देवताओं या मृत आत्माओं, पूर्वजों आदि की प्रार्थना या पुकार के पितृ दोष, अकाल मृत्यु, जंगली जानवरों द्वारा हत्या आदि के कारण आत्माओं की शांति नहीं मानी गई। यह माना जाता है कि आत्माओं या पूर्वजों की शांति हेतु भी 'जागर गीतों' का सहारा लिया गया।

पारस्परिक मेल-मिलाप एवं विश्वास

मनुष्य के सभी सम्बन्ध पारस्परिक विश्वास एवं सहायता से जुड़े हैं। जागर गीतों के माध्यम से आपसी विश्वास प्रगाढ़ होता है। ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी एक-दूसरे के सुख-दुःख, पूजा-पाठ आदि में आस-पड़ोस के लोग मिल-जुल कर हिस्सा लेते हैं। जब जब घर में जागर लगाई जाती है तब दूर-दराज, में बसे कुटुंब-परिवार के लोग इकट्ठे होकर इस कार्य में सम्मिलित होते हैं। पूरा वर्ष भर लोग न मिले, परन्तु जब संयुक्त परिवारों में जागर लगाई जाती है तो सभी लोग एकत्रित होते हैं। सभी लोग एक विश्वास को लेकर देवी देवताओं के पूजन कार्य में सम्मिलित होते हैं। पर्वतीय क्षेत्रों में आज भी इन गीत विशेष के माध्यम से परिवारों को जोड़ने की प्रथा को प्रोत्साहन मिलता है। जागर गीतों के माध्यम से संयुक्त परिवार को भी बढ़ावा मिला है। अपने गांवों, घरों से निकलकर शहर में बस जाने के बाद भी गाँव घरों के देहरी को छूने आज भी वापस आते हैं। जागरों में कुमाऊँ की प्रसिद्ध प्रेम लोकगाथ राजुला मालूशाही का भी वर्णन मिलता है। जो कुमाऊँ के तत्कालीन इतिहास को भी उभारती है। यह बात भी महत्वपूर्ण है।

धार्मिक विश्वास एवं मान्यताओं का आदान-प्रदान

जागर गीतों की परम्परा अति प्राचीन है। आज भी यह लोक कला पूर्वजों के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित हो रही है। बचपन में ही माता-पिता एंव पूर्वजों द्वारा जागर गीतों की परम्परा देखने के कारण व्यस्क होते होते मन-मस्तिष्क में अपना स्थान बना लेती है।

यह एक धार्मिक विश्वास है। जागर कार्य न करने या इसमें सहभागिता न लेने पर अनिष्ट, कार्यों में रुकावट आदि जैसे डर भी मनुष्य को इसे करने हेतु प्रेरित करते हैं। पहाड़ों में आज भी इन मान्यताओं का बोलबाला है। बच्चे लेकर वृद्ध सभी अपने ईष्ट, आराध्य को पूजने हेतु जागर प्रक्रिया में भाग लेते हैं।

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

यह परम्परा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती है। जिससे इन धार्मिक मान्यताओं में विश्वास और प्रबल होता जाता है। हमारे धार्मिक विश्वास ही हमारी संस्कृति की वाहक है। अपने धर्म के प्रति आस्था, विश्वास वर्तमान समय में अति आवश्यक हो गई है। किसी भी राष्ट्र की तरक्की पर उसके धार्मिक पक्ष का भी महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

प्रकृति को सहेजने में सहायक

उत्तराखण्ड राज्य को देवभूमि कहा गया है। यहाँ आज भी प्राकृतिक संसाधन भरपूर मात्रा में विद्यमान है। आदिकाल से ही मनुष्य ने प्रकृति को आराध्य रूप में देखा है। सर्वप्रथम सूर्य चन्द्रमा, बिजली, आग, पानी, हवा आदि सभी को पूजा गया है। हिन्दू धर्म में देवी-देवताओं के नाम भी प्रकृति से सम्बन्धित है। पहाड़ों में आज भी पेड़-पौधों, जंगलों आदि को परिवार के सदस्यों की तरह माना जाता है। आज भी पेड़-पौधों, नदियों,झरनों आदि को नुकसान पहुंचाना या दूषित करना एक पाप समझा जाता है। यही कारण है कि नदी-गधेरों में अधिकांश रूप से 'छल लगना' देखा जाता है। साथ ही जंगलों में घूमना चिल्लाना आदि भी 'छल लगने' के कारण माने जाते हैं। यही कारण है कि सांझ ढलने के बाद जंगलों में जाना या नदी–गधेरों को दूषित करना ईष्ट आदि का अपमान माना गया है। यह स्पष्ट करता है कि प्रकृति का दोहन भी मानव के अनिष्ट का कारक बन सकता है। अतः प्रकृति को सहेजने में भी जागर गायन महत्वपूर्ण माना है।

ऐतिहासिक महत्व

जन साधारण युग विशेष की राजनीति से सदैव प्रभावित होता है। अत: समय विशेष का उल्लेख लोक गीतों में सदैव देखने को मिलता है। डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी जी लिखते हैं-"ग्रामगीतों का समस्त महत्व उनके काव्य-सौन्दर्य तक ही सीमित नहीं है। इनका महत्वपूर्ण कार्य है एक विशाल सम्मता का उद्घाटन जो अब तक या तो विस्मृति के समुद्र में डूबी हुई है गलत समझ ली गई है। जिस प्रकार वेदों द्वारा आर्य सभ्यता का ज्ञान होता है उसी प्रकार ग्राम गीतों द्वारा आर्य-पूर्व- सभ्यता का ज्ञान हो सकता है। ईंट-पत्थर के प्रेमी विद्वान यदि धृष्टता न समझे तो जोर देकर कहा जा सकता है, कि ग्राम-गीतों का महत्व 'मोहन जोदड़ो से कहीं अधिक है। मोहन जोदड़ों सरीखे ग्राम-गीतों के भाष्य का काम दे सकते हैं।[1]

भौगोलिक महत्व

जागर गीतों में भौगोलिक परिचय के साथ वहाँ की नदियों, पहाड़ों, आदि का उल्लेख मिल ही जाता है। जागर गीतों में वहां के पर्वती, घाटियों, मंदिरों, नदियों आदि का परिचय प्राप्त किया जा सकता है। मालूशाही जैसे महाकाव्य में 'तिब्बत' से लेकर 'काठगोदाम' के ऊपर चित्रशिला स्थान तक कुमाऊँ क्षेत्र का विस्तार है, यही नहीं राजुला जोहार से बैराठ की ओर जाती है तो उसके मार्ग में पड़ने वाले प्रसिद्ध स्थानों, सरिताओं, मंदिरों, जातियों का वर्णन करना भी लोक गायक नहीं भूलता।

जागर का सामाजिक महत्व- \

उत्तराखण्ड में लगाई जाने वाली जागर सामाजिक दृष्टि से बहुत महत्व है। भारतीय समाज में जातिगत व्यवस्था का प्रचार प्रचीन समय से हो रहा है। समाज में छोटा-बडा, ऊँच-नीचा आदि भेदभाव प्रारम्भ से ही देखने को मिले है। वर्ण व्यवस्था का रूप परिवर्तित का होकर जाति व्यवस्था में बदल गया। मनुष्य ने अपनी सुविधानुसार प्रत्येक कार्य को जाति व्यवस्था के अनुरूप बांट दिया। जागर में जगरिया, डंगरिया के अतिरिक्त ढोल बजाने वाले आदि विशेष वर्ग से संबन्धित होते हैं। या कहा जाये कि जागर गायन का पारम्परिक रूप आज भी विशेष जातियों से सम्बन्ध रखता है। आज भी जागर गायन के समय इन जातियों का पूर्ण रूप से योगदान देखने को मिलता है। विभिन्न क्षेत्रों में लोकसंगीत अथवा लोकगीतों के प्रस्तुतिकरण पर विशेष वर्ग का अधिकार देखने को मिलता है। जागर गायन के कारण विशेष वर्ग को भी समाज में विशेष स्थान मिलता है। किसी भी जाति में जागर कार्यक्रम में

1 चरण दुवे, श्याम, छत्तीसगढ़ी लोक गीतों का परिचय (भूमिका), 2001, पृष्ठ 65

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

इन गायकों को विशेष स्थान दिया गया है । उत्तराखण्ड में ढोल, दमाऊ वादन तथा छोलिया नृत्य आदि पर विशेष वर्ग का अधिकार है। परम्परागत रूप से ढोल बजाने का ही कार्य कर रहे वर्ग को "ढोली" की संज्ञा दे दी गयी है। इसी प्रकार अनेक क्षेत्रों में "जागर" भी विशेष वर्ग द्वारा ही प्रस्तुतिकरण किया जाता है। वर्तमान समय में भी गृह क्लेश, छल, कार्यों में रुकावट आदि समय में इन जातियों के व्यक्ति विशेष द्वारा "भभूत लगाना" चावल दिखाना तथा जागर लगाना जैसी प्रक्रिया शामिल है। जागर के माध्यम से यह वर्ग आपस में जुड़े हुए है। उच्च तथा निम्न जातियों के भेदभाव की खाई को पाटने का कार्य जागर विधा द्वारा सफल हुवा है। जागर विद्या समाज के प्रत्येक वर्ग को जोड़ने का कार्य करती है।

जागर का महत्त्व समाज में प्रचलित रीति–रिवाज,रहन सहन, खान पान आदि का वर्णन जागर तथा लोकगीतों के माध्यम से समझा जा सकता है। इसलिए कहा गया है "देश का सच्चा इतिहास और उनका नैतिक और सामाजिक आदर्श इन गीतों में एसा सुरक्षित है कि इनका नाश हमारे लिए दुर्भाग्य की बात होगी।[1]

कुमाउँनी समाज में स्त्री का जीवन अत्यन्त कठोर है, अतः उनकी विरह- वेदना लोक गीतों में मुखरित होती हैं। पति वियोग, घर-ग्रहस्थी क्लेश तथा सास-ननद के ताने उनके जीवन में अनेक प्रकार को व्याधियां उत्पन्न करती है। यही कारण है कि पर्वतीय छेत्रों में अधिकतर छल, भूत-प्रेत व्याधिया स्त्रीयों में ही देखने को मिलती है। विज्ञान की भाषा में इसे "मास हिस्टीरिया" के नाम से जाना जाता है, आज भी कई विद्यालयों में एक साथ कई छात्राओं का बेहोश हो जाना, चीखना-चिल्लाना आदि देखने को मिलता है, इन्ही सामाजिक व्याधियों को दूर करते हेतु भी जागर का अपना विशिष्ट महत्व है।

आर्थिक महत्व

लोक-गीत एक विशेष समाज की सांस्कृतिक सामाजिक व्यवस्था के साथ-साथ आर्थिक परिस्थितियों के भी परिचायक होते हैं। इन 'जागर गीतों में दैवीय गीतों के साथ-साथ कृषि के लिए भी विशेष गीत मिलते हैं, पर्वतीय क्षेत्रों की आजीविका का सहरा कृषि का होना सर्वविदित है। झुंगर का भात, कद्दू की सब्जी, मडुवे की रोटी, पिनालू, चौलाई का सांग, भट-घोत की दाल, नारंगी-दाडिम, हिसालू आदि फल व चांदी के आभूषण आदि के गीतों में वर्णन से यहां की आर्थिक अवस्था का अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है।

धार्मिक महत्व

भारतीय लोक-जीवन धर्म प्रधान है, इसलिए लोक गीत जैसे जागर-गीत, आदि इन्हीं विश्वास एवं मतों पर आधारित है। हमारे अनेक धार्मिक ग्रन्थ जैसे- पुराण, वेद आदि शास्त्र के अनेक ज्ञातव्य विषयों पर प्रचुर प्रकाश पड़ता है। लोक अंचलों में शिव, नंदा देवी, इन गीतों से गोलू देवता, गंगनाथ, सैम आदि स्थानीय देवी-देवताओं- भोलानाथ ऐडी देवता आदि का विवेचन है। इससे यह प्रतीत होता है कि इन लोगों का शैव मत में अधिक विश्वास रहा है। "जागर" गीतों का महत्व यहां के लोगों का भूत प्रेत, मनुष्य की देवी शक्ति में प्रबल विश्वास को सिद्ध करता है। त्यौहारों में स्त्रीयों द्वारा उपवास आदि सम्मिलित है।

भाषा-शास्त्र सम्बन्धी महत्व

व्यवहारिक रूप में प्रयोग होने वाले शब्दों का सीधा प्रयोग इन गीतों में मिलता है, लोक अर्थात् सामान्य रूप से लोगों की दैनिक बोल-चाल प्रयोग किए जाने वाले भाषायी शब्द, इन जागर-गीतों में आये अनेक शब्दों में प्रचलित शब्दों के मूल रूप को है टूढ़ा

1. त्रिपाठी, रामनरेश, कविता- कोमुदी , साहित्य भवन,प्रयाग, 1928, पृष्ठ 72

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

जा सकता है। लक्ष्मीकान्त वर्मा लिखते "इन लोक-गीतों में रसात्मक अनुभव, स्वाभाविक उक्तियों की भाषागत परिपक्वता, सुधरे मुहावरे, प्रचलित कथाएँ और संगीतमयी शैली का विशेष महत्व है।"[1]

रोजगार की संभावना

जागर विद्या के माध्यम से इसकी पर्याप्त जानकारी रखने वाले लोगों को रोजगार भी मिला है। आज भी गाँव- घरों में पूजा-पाठ एवं जागर आदि हेतु डंगरियों एव 'जगरियों' की आवश्यकता पड़ती है। ग्रामीण अंचल में आज भी विवाह- उत्सवों पर इन्हें बुलाया जाता है। यही विधा इसकी रोजी-रोटी का साधन बन गया है। उत्तम जानकारी होने पर पर्याप्त आय के स्रोत उत्पन्न हो सकते हैं। ढोल बजाने वाले, गायन करने वाले आदि को विभिन्न उत्सवों कोथिक आदि में कार्यक्रम हेतु आंमत्रित किया जाता है। जहाँ इनकी आजीविका पर्याप्त मात्रा उपलब्ध हो जाती है। राज्य सरकारों द्वारा भी इन्हें पर्याप्त मात्रा में सहायता प्रदान की जा रही है। कुल मिलाकर वर्तमान समय में जागर विद्या का महत्व को प्रत्येक वर्ग ने अंगीकार किया है। विलुप्त होती इस कला को सहेजने हेतु ग्रामीण तथा शहरी अंचल के सभी सदस्य कार्य कर रहे हैं।

निष्कर्ष

अत: यह स्पष्ट है कि जागर गीत उत्तराखण्ड की धरोहर के रूप में देखे जा सकते है। समाज से सामाजिक बुराई और अपराध जैसे चोरी, धोखाधड़ी, हत्या आदि होने पर ईष्ट देव को ही सर्वप्रथम न्यायाधीश के रूप में देखा जाता है, लोगों का असीम विश्वास अपराध करने वाले को सामने आने पर विवश कर देते है। आज भी चावल दिखाना', 'धात लगाना' आदि या गोल्जू दरबार में अर्जी देना भी यहाँ के धार्मिक विश्वास को मुखर करता है। अत: हम यह कह सकते है कि जागर गायन शैली उत्तराखण्ड के लोगों के धर्म और आस्था का मिला जुला संगम है।

प्राचीन समय में जागर गाथाएँ जिस रूप में थीं, वह आज भी उपलब्ध होती हैं उस रूप का निर्माण होने से पूर्व उन पररम्पराओं का निर्माण हुआ जो जीवन की सुख-सुविधाओं के लिहाज से गाने बजाने से ज्यादा उपयोगी थीं। देवी-देवताओं की पूजा-मनौतियाँ इन्हीं में आती हैं। वांछित मनोकामनाओं की पूर्ति, असान्न अनिष्ठ के निवारण, पशु-मवेशियों और खेती-बागबानी की सुरक्षा का 'आश्वासन' थी। इन जीवनोपयोगी परम्पराओं की फलस्तुति करते-करते 'गाथा गायन' आविष्कृत हुआ जिसे जागर नाम से जाना गया। जागर गाथाओं के गायन की परिपाटियाँ, उनकी लयें, कथानकों में प्रयोग होने वाली रूढ़ियाँ, तथ्यों की पुनरावृत्तियों की प्रवृत्ति आदि से उसकी गायन शैली पर तो ध्यान जाता ही है, उनके निर्माण के दिक् और काल भी संज्ञान में आते हैं। जिस प्रकार गाथाएँ एकाएक ही नहीं बन गई उसी प्रकार सभी गाथाएँ किसी एक कालवधि में ही रची भी नहीं गई हैं। उनकी रचना-विधि में अनके सांस्कृतिक युगों की मौजूदगी संसूचित है। इन जागर गायन का महत्व केवल देवता विशेष की जीवनगाथा का गान करके उसे अवतरित कराने तक ही परिसीमित न होकर इस उत्तराखण्ड प्रदेश के मध्यकालीन इतिहास एवं यहां की तत्कालीन सामाजिक स्थितियों, परिस्थितियों, जनमानस का लोक देवी-देवताओं में अटूट विश्वास व अपार आस्था, प्रथा, परम्परा, समाज, संस्कार, धर्म, दुख-दर्द, रूढिवादिता, सामाजिक समस्याओं का वास्तविक ज्ञान को समझने के लिए भी महत्वपूर्ण है।

सन्दर्भ ग्रन्ध

1 चरण दुवे, श्याम, छत्तीसगढ़ी लोक गीतों का परिचय (भूमिका),भारतीय ज्ञान पीठ, नई दिल्ली, 2001, पृष्ठ 65
2 त्रिपाठी, रामनरेश, कविता- कोमुदी, साहित्य भवन, प्रयाग,1928, पृष्ठ 72
3 सम्मेलन पत्रिका, लोक संगीत विशेषांक, अखिल भारतीय हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2019, पृष्ठ 19

1 सम्मेलन पत्रिका, लोक संगीत विशेषांक, 2019, पृष्ठ 19